-डॉ. अन्नपूर्णा सिसोदिया

नारी हृदय के कोमल भावों की निर्झर वैतरणी है कजरी

आइल सखी ससुरे से पिया की पाती / छोड़ नैहर नगरी जाब सासू के देशवा
सुन के संदेशवा गईल बा मन माती / आईल सखी ससुरे से पिया की पाती।
–कहरबा निर्गुन कजरी

भारत का ग्रामीण अंचल संभवत: सभ्यता के प्रारम्भ से ही मानव हृदय के भावोदगारों के वाहक एवं लोक-जीवन की रंग-बिरंगी झांकी से सजे लोकगीतों से गुंजायमान रहा है। इन गीतों द्वारा लोकजीवन की धार्मिक, राजनैतिक, भौगोलिक, सामाजिक, ऐतिहासिक परिस्थितियों एवं संस्कृति, संस्कार तथा सभ्यता से हमारा परिचय होता है।

लोकगीतों में विभिन्न ऋतुओं का वर्णन भी अत्यंत मनोहारी ढंग से किया गया है। शीत, ग्रीष्म, वर्षा, बसंत, सावन आदि ऋतुओं में प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों के साथ मानव मन पर पड़ने वाले इनके प्रभाव को भी इन गीतों में सहजता से दर्शाया जाता है। यूं तो प्रत्येक ऋतु का वर्णन स्वयं में अनूठा है किन्तु वर्षा ऋतु और सावन के गीत लोकांचलों में विशेष रूप से प्रचलित है और आज भी भारतीय मानस को अपने आकर्षण के मोहपाश में बांधे हुए हैं।

उत्तर भारत का पूर्वी अंचल लोक गीतों की इस अनूठी विरासत का धनी क्षेत्र है। सावन और वर्षा के गीतों की बात हो तो इस क्षेत्र में गाई जाने वाली 'कजरी' को कैसे